नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

११



अपरिचितों के बीच



रादुगा प्रकाशन · मास्को



नजानू की कहानियां

११

निकोलाई नोसोव

अपरिचितों के बीच



अनुवादक:
संगमलाल मालवीय

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन

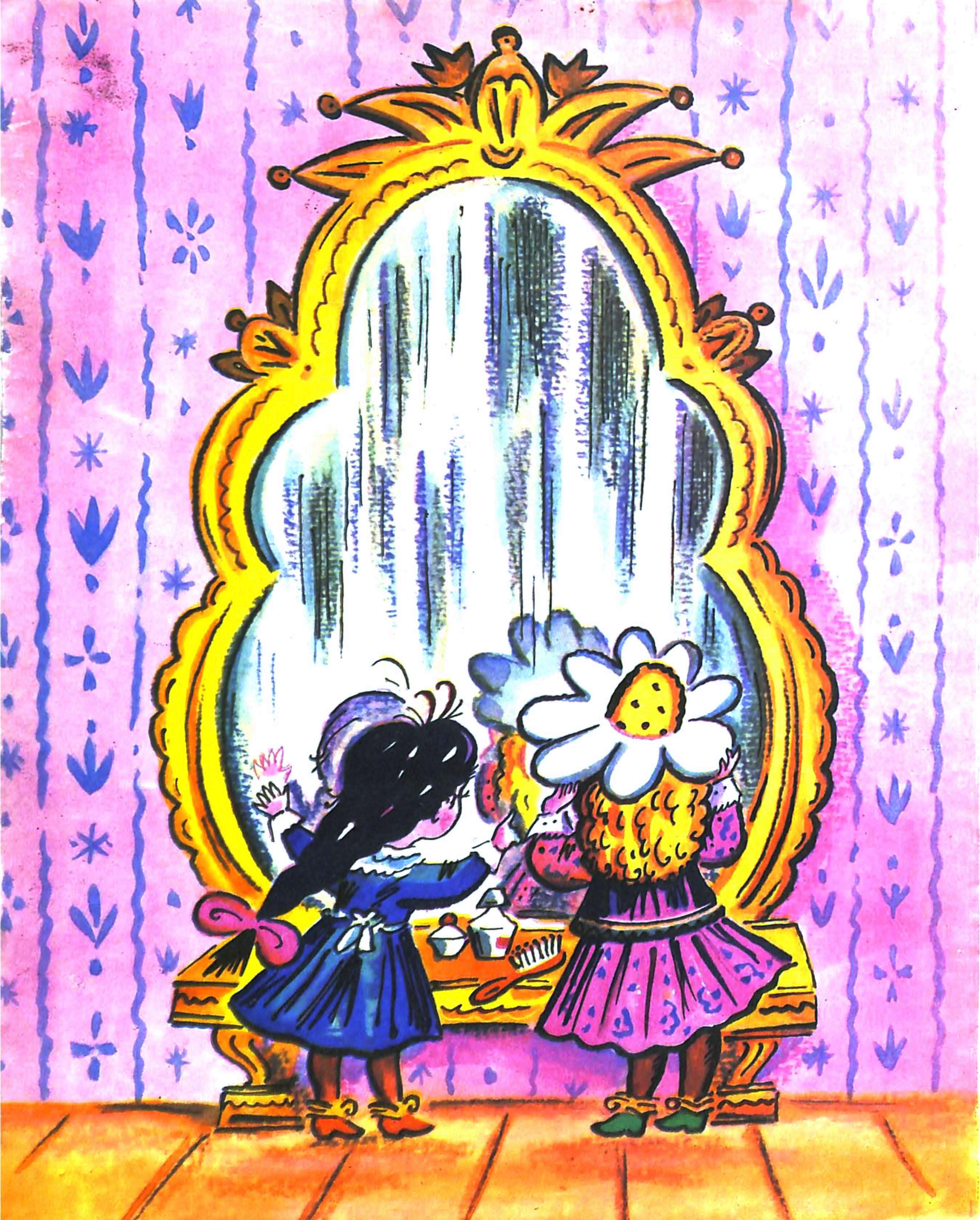
रादुगा प्रकाशन
मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५





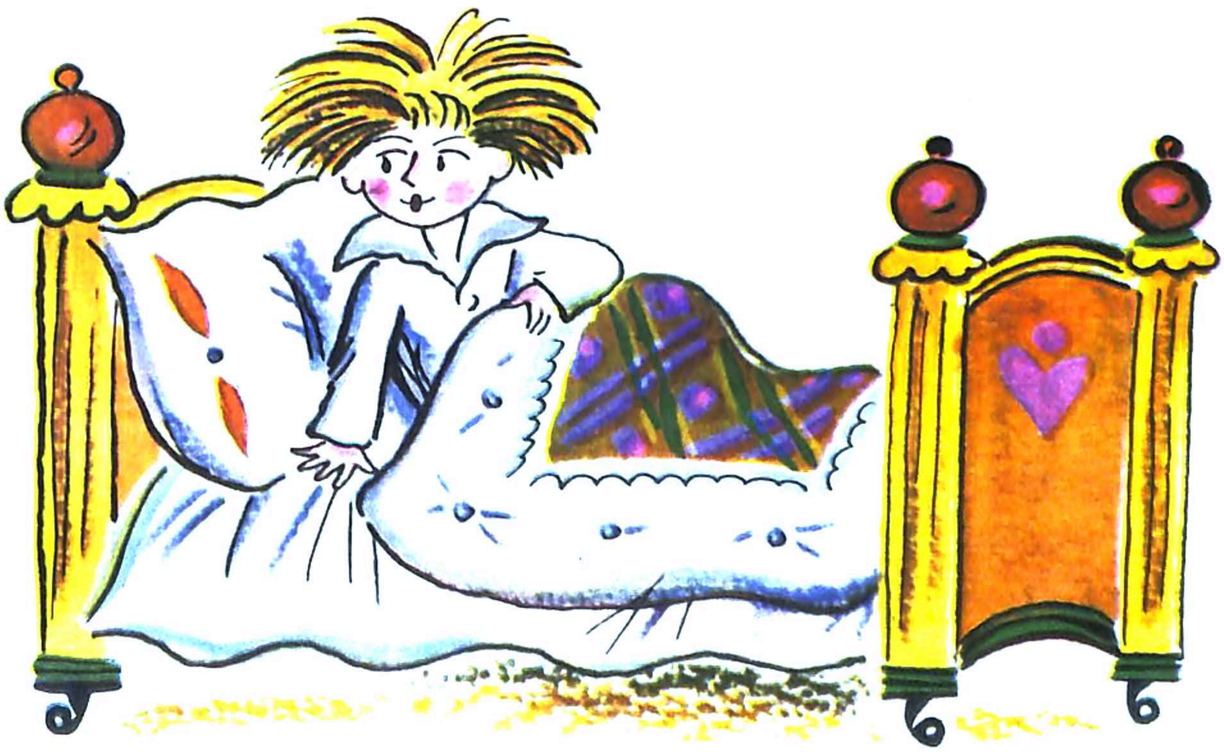
नजानू की आंख खुली, तो उसने ख़ुद को एक अनजान जगह में पाया। वह परोंवाले मुलायम गद्दे पर लेटा हुआ था। यह गद्दा इतना मुलायम था, जैसे फूलों की सेज हो। उसकी नींद किसी आहट से टूटी थी। उसने आंखें खोलकर चारों तरफ़ नज़र दौड़ायी और देखा कि कमरा उसका अपना नहीं था। कोनों में नन्हे-नन्हे सोफ़े रखे हुए थे। दीवारों से लटके चित्रों और कालीनों पर तरह-तरह के फूल बने थे। खिड़की के पास एक गोल इकटंगी मेज़ रखी थी। उस पर कशीदाकारी के लिये रंग-बिरंगे धागों का ढेर दिख रहा था। मेज़ पर ही एक पिनकुशन था, जिसमें तरह-तरह की छोटी-बड़ी सूइयां चुभी हुई थीं, जैसे अपने कांटे उठाये हुए कोई साही हो। थोड़ी दूर पर लिखने की मेज़ रखी थी। उसके बग़ल में किताबों की आलमारी थी। सामनेवाले दीवार पर दरवाज़े के पास एक बड़ा सा आइना था। आइने के सामने दो छुटकियां खड़ी आपस में बातें कर रही थीं। उनमें से एक तो नीले रंग का चमकदार



रेशमी फ़्रॉक पहने थी। कमर पर उसी रंग का रेशमी फ़ीता था, जो पीछे फूल की तरह बंधा हुआ था। उसकी आंखें नीली थीं, पीठ पर काली लम्बी चोटी लटक रही थी। दूसरी छुटकी नन्हे-नन्हे गुलाबी और बैंगनी फूलोंवाला रंग-बिरंगा फ़्रॉक पहने थी। उसके चमकदार सुनहरे बाल पीठ पर लहरा रहे थे। वह आइने के सामने एक टोपी पहनकर देख रही थी और गौरैया की तरह चहकती जा रही थी।

"कैसी रद्दी टोपी है! कैसे भी पहनो, जचती नहीं। मैं तो चौड़े छज्जेवाली टोपी बनाना चाहती थी, पर कपड़ा ही कम पड़ गया, संकरे छज्जे-वाली बनानी पड़ी। जब छज्जा संकरा होता है, तो चेहरा गोल-मटोल दिखने लगता है। यह सचमुच अच्छा नहीं लगता।"

"बहुत सज-संवर चुकी आइने के सामने! मुझसे बिलकुल बर्दाश्त नहीं होता जब लोग आइने के सामने सजने-संवरने लगते हैं," नीली आंखोंवाली छुटकी ने कहा।





"आख़िर आइना बनाया किसलिये गया है?" श्वेतकेशी ने जवाब दिया।

टोपी को बिलकुल पीछे खिसकाकर उसने सिर को पीछे किया और अकड़कर आंखें सिकोड़े आइने में देखने लगी।

नजानू को हंसी आने लगी। रोकते-रोकते भी मुंह से हंसने की आवाज़ निकल आयी। श्वेतकेशी यक़ायक़ आइने से दूर उछल खड़ी हुई और नजानू को सन्देह की नज़र से देखने लगी।

लेकिन नजानू ने आंखें मूंद लीं और सोने का बहाना किया। उसने सुना कि दोनों छुटकियां दबे पांव उसकी ओर बढ़ीं और कुछ दूरी पर ठहर गयीं।

"मुझे लगा कि उसने कुछ कहा है," नजानू ने फुसफुसाहट सुनी। "हो सकता है कि मुझे भ्रम ही हुआ हो... कब उसे होश आयेगा? कल से बेहोश पड़ा हुआ है।"

दूसरी आवाज़ में जवाब मिला :

"मधुमालती ने उसे जगाने से मना किया है। कहा है कि जब ख़ुद जग जाये, तो मैं उसे बुला लाऊं।"

"यह मधुमालती क्या बला है?" नजानू ने सोचा, लेकिन उसी तरह पड़ा रहा ताकि उनको सन्देह न हो कि वह उनकी बातें सुन रहा है।

"कितना साहसी छुटका है!" फिर कोई फुसफुसाया। "देखो तो – ग़ुब्बारे पर उड़ने चला गया!"

नजानू ने सुना कि उसे साहसी कहा गया है, और उसके होंठ ख़ुद-ब-ख़ुद कानों तब लम्बे होने लगे। लेकिन उसने ऐन मौके पर मुस्कराहट रोक ली।

"मैं बाद में आऊंगी जब वह जग जायेगा," आवाज़ जारी रही, "मैं उससे उड़न ग़ुब्बारे के बारे में पूछना चाहती हूं। कहीं चोट से उसका सिर न फिर गया हो!"

"ठेंगा!" नजानू ने सोचा। "सिर मेरा ठीक-ठाक है।"

श्वेतकेशी विदा लेकर चली गयी। कमरे में सन्नाटा छा गया। नजानू आंखें मूंदे हुए देर तक कान खड़े किये लेटा रहा। अन्त में उसने एक आंख खोली और उसने देखा कि नीली आंखोंवाली छुटकी का सिर उसके ऊपर झुका हुआ है। छुटकी स्वागत मुद्रा में मुस्करायी और उंगली से धमकाकर बोली :

"आप क्या हमेशा इसी तरह सोकर उठते हैं? पहले एक आंख खोलते हैं, फिर दूसरी?"

नजानू ने सिर हिलाया और दूसरी आंख खोली।

"मतलब यह कि आप सो नहीं रहे हैं?"

"नहीं, मेरी नींद अभी-अभी खुली है।"

नजानू और भी कुछ कहनेवाला था, पर छुटकी ने उसके होंठों पर उंगली रखते हुए कहा :

"चुप रहिये! आपको बातें नहीं करनी चाहिये। आप बहुत बीमार हैं।"

"बिलकुल नहीं!"

"आपको कैसे मालूम? क्या आप



कोई डाक्टर हैं?"

"नहीं।"

"देखा! और कहते हैं कि बीमार नहीं हैं। आपको चुपचाप लेटे रहना चाहिये, जब तक मैं डाक्टर को नहीं बुला लाती। आपका नाम क्या है?"

"नजानू। और आपका?"

"मेरा नाम नीलाक्षी है।"

"प्यारा सा नाम है," नजानू ने सराहना की।

"बहुत ख़ुशी हुई कि आपको मेरा नाम अच्छा लगा। आप बहुत सभ्य बालक हैं।"

नजानू का मुखड़ा ख़ुशी से खिल उठा। वह बहुत ख़ुश था कि उसकी तारीफ़ की गयी है, क्योंकि उसे शायद ही कोई सराहता था, ज़्यादातर सभी उसकी बुराई ही करते थे। छुटके आसपास नहीं थे और नजानू को इस बात का डर नहीं था कि छुटकी से बातें करने के लिये वे उसे चिढ़ायेंगे। इसीलिये वह नीलाक्षी से बेझिझक नम्रतापूर्वक बातें कर रहा था।





"और उसका क्या नाम है, दूसरी का?" नजानू ने पूछा।

"दूसरी कौन?"

"जिससे आप बातें कर रही थीं। सुन्दर सी थी, सुनहरे बालोंवाली।"

"अच्छा!" नीलाक्षी उछल पड़ी। "मतलब यह कि आप बहुत देर से जाग रहे हैं!"

"नहीं, मैं तो सिर्फ़ एक मिनट के लिये उठा था, फिर तुरन्त सो गया।"

"झूठ, बिलकुल झूठ!" नीलाक्षी ने सिर हिलाया और भौंहें चढ़ा लीं। "तो आपका कहना है कि मैं इतनी सुन्दर नहीं हूं?"

"क्या कहती हैं!" नजानू सहम गया। "आप भी सुन्दर हैं।"

"लेकिन कौन ज़्यादा सुन्दर है, मैं या वह?"

"आप... और वह। आप दोनों ही बहुत सुन्दर हैं।"

"आप बड़े भुद्दे हैं, पर मैं आपको माफ़ करती हूं," नीलाक्षी ने कहा। "आपकी सुन्दरी का नाम हिमपुष्पा है। आप उससे फिर मिलियेगा। बस, अब बहुत हो चुका। आपके लिये देर तक बातें करना नुकसानदेह है। चुपचाप

लेटे रहिये और बिस्तर से उठने की मत सोचिये। मैं मधुमालती को बुलाती हूं।"

"और यह मधुमालती कौन है?"

"मधुमालती हमारी डाक्टर हैं। वह आपका इलाज करेंगी।"

नीलाक्षी चली गयी। नजानू तुरन्त बिस्तर से उठ खड़ा हुआ और अपने कपड़े ढूंढ़ने लगा। वह जल्द ही भाग लेना चाहता था, क्योंकि वह जानता था कि डाक्टर लोग अपने मरीज़ों को कड़वी-कड़वी दवाएं पिलाते हैं, आयडिन की मालिश करते हैं, जिससे सारा बदन बहुत ज़ोर से पड़पड़ाने लगता है। कपड़े आसपास कहीं दिख नहीं रहे थे। तभी उसका ध्यान एक गुड़िया ने आकर्षित किया, जो नन्हे से बेंच पर दीवार के सहारे बैठी हुई थी।

नजानू की तुरन्त इच्छा हुई कि गुड़िया को तोड़कर देखा जाये कि उसके भीतर क्या है – रूई या बुरादा। अपने कपड़ों की बात वह भूल गया और चाकू ढूंढ़ने लगा। लेकिन इसी बीच उसकी नज़र आइने में अपने प्रतिबिम्ब पर पड़ी। उसने गुड़िया को फ़र्श पर फेंक दिया और आइने में अपनी शक्ल देख-देखकर मुंह बनाने लगा। जी भरकर देख चुकने के बाद बोला:

"वैसे तो मैं भी सुन्दर हूं, और मेरा चेहरा बहुत गोल भी नहीं है।"

दरवाज़े के बाहर से किसी के आने की आहट सुनायी दी। नजानू तुरन्त बिस्तर में दुबक गया और ऊपर से रज़ाई ओढ़ ली।

कमरे में नीलाक्षी ने क़दम रखे, उसके साथ एक दूसरी छुटकी भी थी, सफ़ेद लबादा पहने। उसके सर पर सफ़ेद कपड़े की टोपी थी, हाथ में भूरे रंग का एक छोटा सा बैग था। उसके लाल-लाल और फूले हुए गाल थे। उसकी भूरी आंखें मोटे चश्मे के पीछे से कड़ाई के साथ देख रही थीं। नजानू समझ गया कि यही मधुमालती है, जिसके बारे में नीलाक्षी ने बताया था।

मधुमालती ने नजानू के बिस्तर की तरफ़ स्टूल खिसकाया, उस पर अपना बैग रखा और सिर हिलाकर बोली:

"अरे, ये छुटके! हमेशा कोई न कोई शैतानी करते रहते हैं! अब ज़रा बताइये तो कि इस गुब्बारे पर उड़ने की आपको क्या ज़रूरत पड़ी थी? चुप रहिये, चुप रहिये! मुझे मालूम है कि आप क्या कहेंगे: अब फिर ऐसा नहीं करूंगा। सभी छुटके यही कहते हैं और बाद में फिर से नटखटपन करने लगते हैं।"

मधुमालती ने बैग खोला और कमरे में आयडिन या किसी और दवा की



गंध फैल गयी। नजानू डर के मारे अकड़ बैठ गया। मधुमालती उसकी तरफ़ मुड़कर बोली:

"उठिये, मरीज़ जी।"

नजानू बिस्तर से उठने लगा।



"खड़े होने की ज़रूरत नहीं, मरीज़ जी!" मधुमालती ने कड़ाई के साथ कहा। "मैंने तो सिर्फ़ बैठने के लिये कहा था।"

नजानू ने कन्धे उचकाये और बिस्तर पर बैठ गया।

"कन्धे उचकाने की ज़रूरत नहीं, मरीज़ जी," मधुमालती ने टिप्पणी की। "जीभ दिखाओ तो।"

"किसलिये?"

"दिखाओ, दिखाओ। यह ज़रूरी है।"

नजानू ने जीभ बाहर निकाली।

"'आ' कहिये।"

"आ-आ-आ," नजानू ने ज़बान बाहर निकाली।

मधुमालती ने अपने बैग से स्टेथिस्कोप निकाला और नजानू के सीने से लगाकर जांच करने लगी:

"ज़रा गहरी सांस लीजिये।"

नजानू ने स्टीम इंजन की तरह नाक सुड़की।

"अब सांस रोके रहिये।"

नजानू ने हंसी पर काबू पाते हुए सांस खींची।

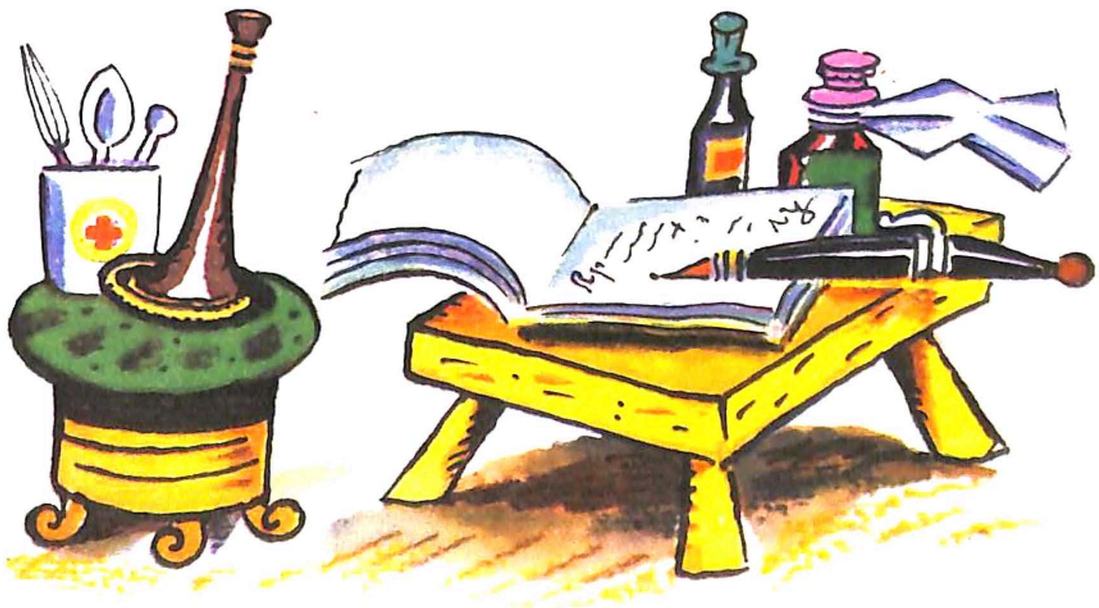
"आप हंस क्यों रहे हैं, मरीज़ जी? मैंने ऐसी कोई बात नहीं कही है!"

"यह कैसे मुमकिन है कि मैं बिलकुल सांस न लूं!" नजानू ने खीसें निपोड़ते हुए पूछा।

"सचमुच आप सांस एकदम नहीं रोक सकते, लेकिन क्षण भर के लिये तो थाम ही सकते हैं।"

"ठीक है," नजानू ने सहमति प्रगट की और सांस रोक ली।

डाक्टरी मुआयना कर लेने के बाद मधुमालती मेज़ पर बैठकर नुसखा लिखने लगी।



"आपके मरीज़ के कन्धे पर नील पड़ गया है," उसने नीलाक्षी से कहा। "दवाखाने में जाकर मधु का प्लास्टर ले आओ। इसे काटकर मरीज़ के कन्धे पर चिपका दो। और उसे बिस्तर से उठने मत दो। अगर वह बिस्तर से उठेगा तो आपके सारे बर्तन तोड़ डालेगा और किसी का माथा भी फोड़ देगा। छुटकों के साथ ज़रा सख़्ती करना ज़रूरी है।"

मधुमालती ने स्टेथिस्कोप उठाकर बैग में रखा और एक बार फिर सख़्ती से नजानू की तरफ़ देखकर चली गयी।

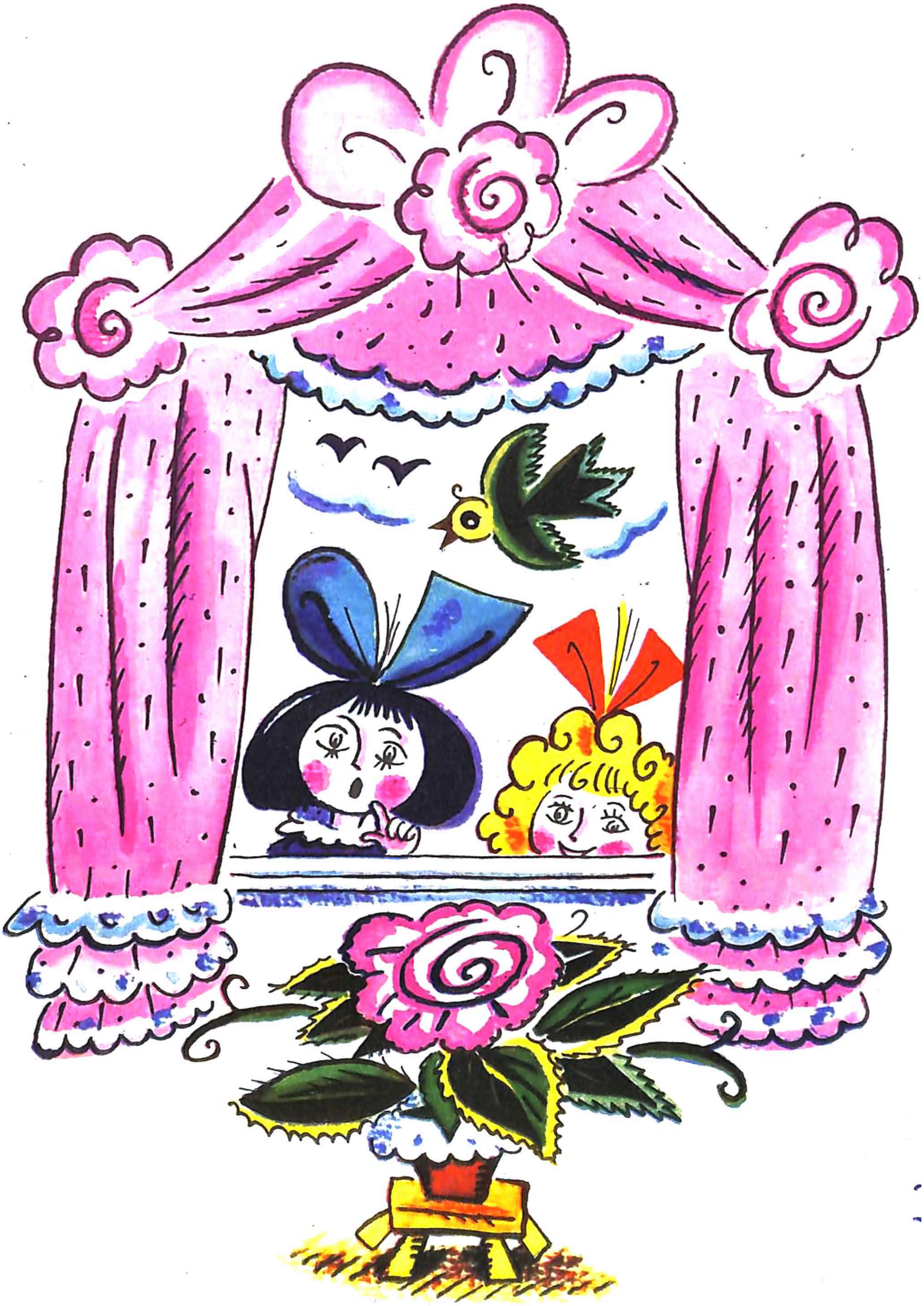
नीलाक्षी ने मेज़ पर से नुसखा उठाया और बोली:

"सुन लिया आपने? आपको लेटे रहना है।"

उत्तर में नजानू ने मुंह लटका लिया।

"मुंह बनाने की ज़रूरत नहीं है। और हां, अपने कपड़े ढूंढ़ने की कोशिश मत कीजियेगा क्योंकि मैंने उन्हें अच्छी तरह छिपा दिया है," नीलाक्षी ने कहा और दवा का नुसखा हाथ में लेकर कमरे से बाहर निकल गयी।

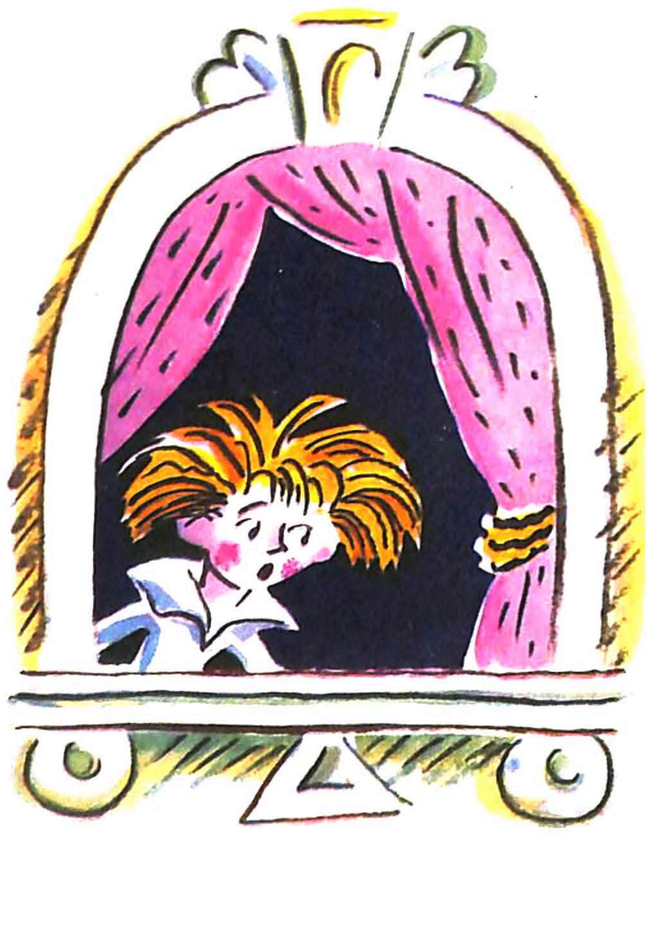




Н. Носов
НА НОВОМ МЕСТЕ
на языке хинди

N.Nosov
IN A STRANGE PLACE
in Hindi

सोवियत संघ में मुद्रित







प्यारे बच्चो,

नजानू और उसके दोस्तों के रोचक कारनामे आपको ज़रूर पसन्द आये होंगे। नजानू की कहानियों के इस क्रम में फूलनगर के निवासियों के बारे में आप हमारे यहां से प्रकाशित होनेवाली आगामी पुस्तकों में पढ़ेंगे:

नये दोस्त

मेज़ पर गपशप

ISBN 5-05-000982-0

ISBN 5-05-001502-2